15 दाज्यू

शेखर जोशी

शेखर जोशी का जन्म 10 सितंबर 1932 को अल्मोड़ा (उत्तरांचल) के ओलियागांव नामक स्थान पर हुआ। आपने केकड़ी एवं अजमेर में स्कूली शिक्षा प्राप्त की। लगभग तीस वर्षों तक इलाहाबाद के निकट एक सैनिक औद्योगिक प्रतिष्ठान में कार्यरत रहने के बाद आप स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं। आपके चर्चित कहानीसंग्रह हैं ''कोसी का घटवार'', ''साथ के लोग'', ''दाज्यू'', ''हलवाहा'' एवं ''नौरंगी बीमार है। आपकी आदमी और कीड़े कहानी को 1955 में धर्मयुग द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। नई कहानी आंदोलन के चर्चित कथाकार ''महावीरप्रसाद द्विवेदी पुरस्कार' और ''पहल'' सम्मान से सम्मानित। ''दाज्यू'' कहानी पर चिल्ड्रन फिल्म सोसायटी द्वारा फिल्म का निर्माण।

दाज्यू कहानी बाल-श्रमिक पर लिखी गयी कहानी है। मदन एक पहाड़ी बालक है, जो पेट की आग बुझाने के लिए शहर में आकर एक होटल में काम करता है। भोलेपन में जिसे वह अपना ''दाज्यू'' अर्थात् बड़ा भाई समजने लगता है, वही किस प्रकार एक दिन उसके बाल-मन पर आघात कर जाता है इसका मार्मिक चित्रण इस कहानी में हुआ है।

चौक से निकल कर बायीं ओर जो बड़े साइनबोर्डवाला छोटा कैफे है, वहीं जगदीशबाबू ने उसे पहली बार देखा था। गोरा-चिट्टा रंग, नीली शफ़्फ़ाफ़ आँखें, सुनहरे बाल और चाल में एक अनोखी मस्ती-पर शिथिलता नहीं। कमल के पत्ते पर फिसलती हुई पानी की बूँद की सी फुर्ती। आँखों की चंचलता देखकर उसकी उम्र का अनुमान केवल नौ-दस वर्ष ही लगाया जा सकता था और शायद यही उम्र उसकी रही होगी।

अधजली सिगरेट का एक लम्बा कश खींचते हुए जब जगदीशबाबू ने कैफे में प्रवेश किया तो वह एक मेज पर से प्लेटें उठा रहा था और जब वे पास ही कोने की टेबल पर बैठे तो वह सामने था। मानो, घंटों से उनकी, उस स्थान पर आनेवाले व्यक्ति की, प्रतीक्षा कर रहा हो। वह कुछ बोला नहीं। हां, नम्रता प्रदर्शन के लिये थोड़ा झुका और मुस्कुराया भर था, पर उसके इसी मौन में जैसे सारा 'मीनू' समाहित था। ''सिंगल चाय'' का आर्डर पाने पर वह एक बार पुनः मुस्करा कर चल दिया और पलक झपकते ही चाय हाज़िर थी।

मनुष्य की भावनाएँ बड़ी विचित्र होती है। निर्जन, एकांत स्थान में निस्संग होने पर भी कभी-कभी आदमी एकाकी अनुभव नहीं करता। लगता है, इस एकाकीपन में भी सब कुछ कितना निकट है, कितना अपना है। परंतु इसके विपरीत कभी-कभी सैकड़ों नर-नारियों के बीच जनरवमय वातावरण में रह कर भी सूनेपन की अनुभूति होती है। लगता है, जो कुछ है वह पराया है, कितना अपनत्वहीन! पर यह अकारण ही नहीं होता। इस एकाकीपन की अनुभूति, इस अलगाव की जड़ें होती हैं- विछोह या विरक्ति की किसी कथा के मूल में।

जगदीशबाबू दूर देश से आये हैं, अकेले हैं। चौक की चहल-पहल कैफे के शोरगुल में उन्हें लगता है, सब कुछ अपनत्वहीन है। शायद कुछ दिनों रहकर, अभ्यस्त हो जाने पर उन्हें इसी वातावरण में अपनेपन की अनुभूति होने लगे, पर आज तो लगता है यह अपना नहीं अपनेपन की सीमा से दूर, कितना दूर है, और तब उन्हें अनायास ही याद आने लगते हैं अपने गाँव पड़ोस के आदमी, स्कूल-कालेज के छोकरे, अपने निकट शहर के कैफे-होटल...।

'चाय साब !'

जगदीशबाबू ने राखदानी में सिगरेट झाड़ी। उन्हें लगा, इन शब्दों की ध्वनि में वही कुछ है जिसकी रिक्तता उन्हें अनुभव हो रही है और उन्होंने अपनी शंका का समाधान कर लिया-

'क्या नाम है तुम्हारा?'

'मदन।'

'अच्छा, मदन! तुम कहाँ के रहनेवाले हो?'

'पहाड़ का हूँ, बाबूजी!'

'पहाड़ तो सैकड़ों है- आबू, दार्जिलिंग, मसूरी, शिमला, अल्मोड़ा! तुम्हारा गाँव किस पहाड़ में है?'

इस बार शायद उसे पहाड़ और जिले का भेद मालूम हो गया। मुस्करा कर बोला-

'अल्मोड़ा सा'ब अल्मोड़ा।'

'अल्मोड़ा मैं कौन-सा गाँव है?' विशेष जानने की गरज से जगदीशबाबू ने पूछा।

इस प्रश्न ने उसे संकोच में डाल दिया। शायद अपने गाँव की निराली संज्ञा के कारण उसे संकोच हुआ था। इस कारण टालता हुआ सा बोला, वह तो दूर है सा'ब अल्मोड़ा से पंद्रह-बीस मील होगा।'

'फिर भी, नाम तो कुछ होगा ही।' जगदीशबाबू ने जोर देकर पूछा।

'डोट्यालगों' वह सकुचाता हुआ सा बोला।

जगदीशबाबू के चेहरे पर पुती हुए एकाकीपन की स्याही दूर हो गयी और जब उन्होंने मुस्करा कर मदन को बताया कि वे भी उसके निकटवर्ती गाँव के रहनेवाले हैं तो लगा जैसे प्रसन्नता के कारण अभी मदन के हाथ से 'ट्रे' गिर पड़ेगी। उसके मुँह से शब्द निकलना चाह कर भी न निकल सके। खोया-खोया सा वह अपने अतीत को फिर लौट-लौट कर देखने का प्रयत्न कर रहा हो।

अतीत-गाँव... ऊँची पहाड़ियां... नदी... ईजा (मां)...बाबा... दीदी... भुलि (छोटी बहन)... दाज्यू (बड़ा भाई)...!

मदन को जगदीशबाबू के रूप में किसकी छाया निकट जान पड़ी! ईजा?- नहीं, बाबा? नहीं, दीदी, ...भुलि? - नहीं, दाज्यू? हाँ, दाज्यू!

दो-चार ही दिनों में मदन और जगदीशबाबू के बीच की अजनबीपन की खाई दूर हो गयी। टेबल पर बैठते ही मदन का स्वर सुनाई देता-

'दाज्यू, जैहिन्न...।'

'दाज्यू, आज तो ठंड बहुत है।'

'दाज्यू, क्या यहाँ भी 'ह्यू' (हिम) पड़ेगा?'

'दाज्यू, आपने तो कल बहुत थोड़ा खाना खाया।' तभी किसी ओर से 'बॉय' की आवाज़ पड़ती और मदन उस आवाज़ की प्रतिध्वनि के पहुँचने से पहले ही वहाँ पहुँच जाता! आर्डर लेकर फिर जाते-जाते जगदीशबाबू से पूछता, 'दाज्यू, कोई चीज?'

'पानी लाओ।'

'लाया दाज्यू', शब्द को उतनी ही आतुरता और लगन से दुहराता जितनी आतुरता से बहुत दिनों के बाद मिलने पर भी माँ अपने बेटे को चूमती है।

कुछ दिनों बाद जगदीशबाबू का एकाकीपन दूर हो गया। उन्हें अब चौक, कैफे ही नहीं सारा शहर अपनेपन के रंग में रंगा हुआ सा लगने लगा परंतु अब उन्हें यह बार-बार 'दाज्यू' कहलाना अच्छा नहीं लगता और यह मदन था कि दूसरी टेबल से भी 'दाज्यू'...।

'मदन! इधर आओ।'

'आया दाज्यू!'

'दाज्यू' शब्द की आवृत्ति पर जगदीशबाबू के मध्यमवर्गीय संस्कार जाग उठे- अपनत्व की पतली डोरी 'अहं' की तेज धार के आगे न टिक सकी।

'दाज्यू', चाय लाऊं?'

'चाय नहीं, लेकिन यह दाज्यू-दाज्यू क्या चिल्लाते रहते हो दिन रात। किसी की प्रेस्टिज का ख्याल भी नहीं है तुम्हें?'

जगदीशबाबू का मुँह क्रोध के कारण तमतमा गया, शब्दों पर अधिकार नहीं रह सका। मदन 'प्रेस्टिज' का अर्थ समज सकेगा या नहीं, यह भी उन्हें ध्यान नहीं रहा, पर मदन बिना समझाये ही सब कुछ समज गया था।

मदन को जगदीशबाबू के व्यवहार से गहरी चोट लगी। मैनेजर से सिरदर्द का बहाना कर वह घुटनों में सर दे कोठरी में सिसकियाँ भर-भर रोता रहा। घर-गाँव से दूर ऐसी परिस्थिति में मदन का जगदीशबाबू के प्रति आत्मीयता-प्रदर्शन स्वाभाविक ही था। इसी कारण आज प्रवासी जीवन में पहली बार उसे लगा जैसे किसी ने उसे ईजा की गोदी से, बाबा की बांहों के और दीदी के आंचल की छाया से बलपूर्वक खींच लिया हो परंतु भावुकता स्थायी नहीं हो तो। रो लेने पर, अंतर की घुमड़ती वेदना की आँखों की राह बाहर निकाल लेने पर मनुष्य जो भी निश्चय करता है वे भावुक क्षणों की अपेक्षा अधिक विवेकपूर्ण होते हैं।

मदन पूर्ववत काम करने लगा।

दूसरे दिन कैफे जाते हुए अचानक ही जगदीशबाबू की भेंट बचपन के सहपाठी हेमंत से हो गयी। कैफे में पहुँच कर जगदीशबाबू ने इशारे से मदन को बुलाया परंतु उन्हें लगा जैसे वह उनसे दूर-दूर रहने का प्रयत्न कर रहा हो। दूसरी बार बुलाने पर ही मदन आया। आज उसके मुँह पर वह मुस्कान न थी और न ही उसने 'क्या लाऊँ दाज्यू' कहा। स्वयं जगदीशबाबू को ही कहना पड़ा, 'दो चाय, दो ऑमलेट' परंतु तब भी 'लाया दाज्यू' कहने की अपेक्षा 'लाया सा'ब' कहकर वह चल दिया। मानों दोनों अपरिचित हों।

'शायद पहाड़िया है?' हेमंत ने अनुमान लगाकर पूछा।

'हाँ', रूखा सा उत्तर दे दिया जगदीशबाबू ने और वार्तालाप का विषय ही बदल दिया।

मदन चाय ले आया था।

'क्या नाम है तुम्हारा लड़के?' हेमन्त ने अहसान चढ़ाने की ग़रज़ से पूछा।

कुछ क्षणों के लिए टेबुल पर गंभीर मौन छा गया। जगदीशबाबू की आँखें चाय की प्याली पर ही झुकी रह गयीं। मदन की आँखों के सामने विगत स्मृतियाँ घूमने लगीं... जगदीशबाबू का एक दिन ऐसे ही नाम पूछना... फिर... दाज्यू आपने तो कल थोड़ा ही खाया... और एक दिन 'किसी की प्रेस्टिज का ख्याल नहीं रहता तुम्हें...'

जगदीशबाबू ने आँखें उठाकर मदन की ओर देखा, उन्हें लगा जैसे अभी वह ज्वालामुखी सा फूट पड़ेगा।

हेमंत ने आग्रह के स्वर में दुहराया, 'क्या नाम है तुम्हारा?'

बॉय कहते हैं सा'ब मुझे। संक्षिप्त-सा उत्तर देकर वह मुड़ गया। आवेश में उसका चेहरा लाल होकर और भी अधिक सुंदर हो गया था।

शब्दार्थ और टिप्पणी

शक्काफ उजली **मीनू** व्यंजन, सूची **निस्संग** अकेला **जनश्दमय** शोरगुलयुक्त **हिम** बर्फ **ह्यू** बर्फ **अहं** घमंड **प्रेस्टिज** इज्जत **वेदना** पीड़ा

स्वाध्याय

1. **सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :**
   (1) मदन का गाँव किस पहाड़ी क्षेत्र में था?
   (अ) मसूरी (ब) शिमला (क) दार्जिलिंग (क) अल्मोड़ा
   (2) कहानी के अंत में नए ग्राहक हेमंत को मदन ने अपना नाम क्या बताया?
   (अ) मदन (ब) पहाड़ो (क) बाँप (ड) बेयश
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**
   (1) मदन का गाँव किस पहाड़ी क्षेत्र में था?
   (2) नए ग्राहक हेमंत को मदन ने अपना नाम क्या बताया?
   (3) जगदीशबाबू के व्यवहार से मदन को चोट क्यों लगी?
3. **निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर दीजिए :**
   (1) जगदीशबाबू को पहले-पहले नए शहर आकर कैसा लगता था?
   (2) प्रारंभ में जगदीशबाबू का व्यवहार मदन के प्रति कैसा था?
   (3) जगदीशबाबू ने मदन को 'दाज्यू' कहने पर क्यों डाँटा?
   (4) 'दाज्यू' कहानी में बाल-मन की संवेदना का मार्मिक चित्रण हुआ है- समझाइए।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- गाँव की मुलाकात कीजिए और गाँव के मानवीय संबंधो को समझाइए।
- परिश्रम का महत्त्व - निबंध लिखिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- बाल श्रमिकों के चित्रों का संग्रह करवाइए।

●